-:भूमिका:-

आज हम उस दौर में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ 'इतिहास के अंत' की घोषणा की जा चुकी है। दूसरी ओर इतिहास के गर्भ में ही आज के अस्मितामूलक विमर्शों के हल तथा स्वरूप को ढूँढने की कोशिश भी की जा रही है। आधुनिक युग के शुरुआत के साथ ही इतिहास के पात्रों, स्थानों और घटनाओं को आधार बनाकर लेखन की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। पहला गिरमिटिया, सूत्रधार, विश्रामपुर का संत, कितने पाकिस्तान, कलिकथा-वाया-बायपास जैसी रचनाएँ इसी की एक कड़ी हैं। एक तरफ 'विश्व-ग्राम' की परिकल्पना है तो दूसरी ओर छोटी-छोटी जगहों को भी रचनाओं का केंद्र बनाया जा रहा है। इसका कारण क्या है? क्या हमारे आज के समाज का यथार्थ इतना गतिशील हो चुका है कि हमारी रचनाधर्मिता उसे महाकाव्यात्मक स्वरूप में पकड़ नहीं पा रही है, अतः इतिहास की शरण में जाना उसकी मजबूरी है या फिर ये उत्तर-आधुनिकता या उसके तहत आए हुए अस्मिता विमर्शों का दबाव है जो हमें इतिहास के शरण में लौटने को मजबूर कर रहे हैं।

अमरकांत का 'इन्हीं हथियारों से' भी ऐसी ही ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। इसमें सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन को बलिया के संदर्भ में देखने की कोशिश अमरकांत ने की है। ऐसे में पहला प्रश्न यही उठता है कि 50-60 साल बाद इस घटना को आधार बनाकर उपन्यास लिखने का उद्देश्य क्या है? क्या यह इतिहास का पुनर्पाठ है या इतिहास के माध्यम से आज के जटिल यथार्थ को देखने की कोशिश की गयी है। यह कहीं यह तो नहीं दिखाता कि आप कितना भी इतिहास के अंत की घोषणा कर लें इतिहास आपका पीछा नहीं छोड़ता वह जाने अनजाने हमें अपनी शक्ति और सीमा का एहसास कराता रहता है। अबूतालिब ने ठीक ही कहा है-

अगर तुम अतीत पर पिस्तौल से गोली चलाओगे,

तो भविष्य तुम पर तोप से गोले बरसाएगा।

दूसरी दृष्टि प्रतिरोध के मॉडल के तलाश की है। सोवियत संघ के विघटन और शक्तियों के ध्रुवीकरण के कारण विकल्प की कमी ही इतिहास से ऊर्जा लेने तथा नायक ढूँढने की भूमिका तो नहीं है पहले भी साहित्यकारों ने इतिहास से शक्ति और प्रेरणा लेने तथा महानायक का मॉडल प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। राष्ट्र नायक, महानायक ढूँढने की परंपरा में पहले भी इतिहास से जुड़ना होता रहा है। इस संदर्भ में चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, झूठा-सच, झांसी की रानी का नाम लिया जा सकता है। आज दुनिया युद्ध के

मुहाने पर खड़ी है। हथियारों की होड़, माओवाद, नक्सलवाद में हिंसा को प्रश्रय मिला है ऐसे में अहिंसक आंदोलन को आधार बनाना इसका समाधान भी बन सकता है। आज के अधिकतर नव–सामाजिक आंदोलनों का आधार अहिंसा है ऐसे में अमरकांत ने अहिंसा की प्रासंगिकता को भी आधार बनाया है। अतः यह इसकी भी पड़ताल करता है कि क्या अहिंसा केवल उस समय के राष्ट्र-राज्य की जरूरत थी या फिर ये आज भी प्रासंगिक हैं? उपन्यास में अहिंसा तथा निम्नवर्गीय(सबाल्टर्न) की स्थापना के विशेष आग्रह के पीछे कहीं न कहीं अमरकांत की यही दृष्टि काम कर रही है। अगर हम आधुनिक भारत के इतिहास को उठाकर देखें तो हमें अनेक प्रतिष्ठित इतिहासकार और उनकी पुस्तकें मिल जाती हैं। इनमें गांधी, नेहरू, सुभाष जैसे तमाम बड़े नाम मिल जाते हैं(सन् 1942 आंदोलन के संदर्भ में) , परंतु जिस निम्न वर्ग (सबाल्टर्न) की महत्त्वपूर्ण भूमिका इस इतिहास में रही है वो यहाँ से नदारद है। यदि है भी तो लगभग भीड़ के रूप मे जिसका न कोई स्वरूप होता है न कोई आकार। आनेवाली पीढ़ियाँ इससे क्या निष्कर्ष निकालेंगी, या तो निम्नवर्ग का अस्तित्व ही नहीं था या फिर उसकी इस इतिहास के महत्त्वपूर्ण और निर्णायक घटनक्रमों में कोई भूमिका ही नहीं है। प्रस्तुत उपन्यास में इस निम्नवर्गीय(सबाल्टर्न की) स्थापना की दृष्टि शोध को एक विशेष आधार प्रदान करती है। इस निम्नवर्ग में मुख्यतः उस दौर की सामान्य जनता जिसमें किसान, मजदूर, स्त्रियाँ, और दलित हैं जिन्हें महज भीड़ समझकर मुख्यधारा के इतिहास में नकार दिया गया है, शामिल हैं जबकि भारत में आज भी इन्हीं की संख्या ज्यादा है तथा स्वतंत्रता आंदोलन में इनकी भूमिका भी महत्त्वपूर्ण रही है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय **'1942 का आंदोलन और इन्हीं हथियारों से'** है जिसमें इन्हीं प्रश्नों को ध्यान में रखने की कोशिश की गयी है। इस विषय के अंतर्गत अमरकांत के समय और समाज को समझने के साथ सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन को बलिया ही नहीं पूरे भारतीय संदर्भ में आज के सवालों, समस्याओं और उनके हलों के संदर्भ में रेखांकित करने की कोशिश सन्निहित है। मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभक्त किया है। जिसके तहत निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया गया है।

प्रथम अध्याय में 'अमरकांत के कृतित्व एवं व्यक्तित्व' पर विचार किया गया है। इसमें अमरकांत के समय और समाज के संदर्भ में उनकी रचनात्मक संवेदना के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। अमरकांत का समय और समाज किस तरह उनकी कृतियों तथा रचनाशीलता को प्रभावित करता है इस पर विचार करने का भी प्रयास किया गया है। अमरकांत के रचना संसार पर भी संक्षिप्त चर्चा की गयी है।

दूसरा अध्याय- 'सन 1942 का आंदोलन और हिंदी उपन्यास' के माध्यम से सन् 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन पर आधारित अन्य उपन्यासों पर संक्षिप्त दृष्टि के साथ ही तत्कालीन राजनैतिक परिदृश्य पर भी विचार किया गया है। इसमें तत्कालीन राजनैतिक घटनाक्रमों की आंदोलन तथा उसकी औपन्यासिक रूपांतरण में भूमिका को प्रकाश में लाने की कोशिश की गयी है। इसमें आंदोलन की पृष्ठभूमि को समझने के साथ ही उसके उपन्यास विधा पर पड़े प्रभाव के आंकलन की दृष्टि भी सन्निहित है।

तीसरा अध्याय- '1942 आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में इन्हीं हथियारों से' में आंदोलन का समाज, जनमानस, विचारधारा पर प्रभाव और बलिया जैसे छोटी सी जगह में उसके प्रति दृष्टि और सहयोग के आंकलन का प्रयास है। इस अध्याय में 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में निम्नवर्ग के योगदान तथा उसकी स्थापना के लिए अमरकांत के प्रयासों और संवेदना को प्रकाश में लाने की कोशिश की गयी है। तत्कालीन आंदोलन के विभिन्न हथियारों की पहचान तथा उनकी वर्तमान में प्रासंगिकता पर विचार भी इसमें सन्निहित है। इस अध्याय में बलिया की पृष्ठभूमि तथा तत्कालीन आंदोलन के संदर्भ में उसकेमहत्त्व और भूमिका के पड़ताल की कोशिश भी दृष्टव्य है।

चौथा अध्याय- 'उपन्यास में चित्रित तत्कालीन परिवेश' के माध्यम से अमरकांत द्वारा उपन्यास में चित्रित समाज, संस्कृति और भाषा का अवलोकन किया गया है। इस अध्याय में मुख्यतः इनकी पड़ताल आंदोलन के प्रभाव तथा उसके सहयोग से विकसित भाषा, संस्कृति और समाज के संदर्भ में की गयी है। इन सभी पर आंदोलन का क्या प्रभाव था तथा इन सब ने समग्र रूप से आंदोलन को किस कदर प्रभावित किया, इसके मूल्यांकन की कोशिश इस अध्याय में अंतर्निहित है।

मेरे शोध को निष्कर्ष तक पहुंचाने में कई लोगों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान रहा है। उनके इस योगदान को शब्दों की सीमा में शायद ही बांधा जा सके फिर भी उनके प्रति आभार व्यक्त न करना उनके प्रति कृतघ्नता होगी। इस कार्य की पूर्णता में मैं सर्वप्रथम अपने पूज्य माता-पिता के प्रति आभार प्रकट करना चाहूँगा जिनके सहयोग तथा विश्वास के बिना मैं यहाँ तक नहीं पहुँच पाता।

तत्पश्चात मैं साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. सूरज पालीवाल के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे प्रस्तुत शोध विषय पर कार्य करने की सहज अनुमति दी।

मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. उमेश कुमार सिंह के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मेरे ऊपर अपार विश्वास दिखाया तथा अपने सहयोग से मुझे सदैव आगे बढ़ने को प्रेरित किया। शोध में अपने विचारों को खुले तौर पर व्यक्त करना तथा प्राकल्पना विकसित करना उनके ही सहयोग तथा विश्वास का परिणाम है। इस सहयोग, निर्देशन और स्नेह के लिए मैं उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरा यह लघु शोध-प्रबंध साहित्य विभाग के सभी शिक्षकों के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान से ही पूर्णता प्राप्त कर पाया है, मैं उन सभी लोगों के प्रति कोटिशः आभार व्यक्त करता हूँ।

शोध कार्य में मित्रों तथा वरिष्ठ शोधर्थियों का बहुमूल्य योगदान रहा है जिनके प्रति आभार व्यक्त करना नैतिक कर्तव्य बनता है। अतः मैं वरिष्ठ शोधार्थी गोविंद प्रसाद वर्मा, सुनील कुमार यादव,संतोष कुमार राय, संजीव कुमार झा तथा मित्रों में विपुल, धीरेंद्र, शक्ति, सौरभ, सितारे हिन्द और निराला के प्रति कोटिशः आभार व्यक्त करता हूँ। विपुल के प्रति विशेष आभार जिसने मुश्किल क्षणों में मुझे संबलतथा सहयोग प्रदान किया

(रवि प्रकाश गोस्वामी)

उपसंहार

'इन्हीं हथियारों से' महज मनोरंजन या घटनाक्रमों का दस्तावेजीकरण नहीं है वरन् सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन तथा बलिया को आधार बनाकर लिखा गया आज के विमर्शों तथा समस्याओं से अनुप्राणित कृति है। इसका नामकरण ही इसकी अंतर्वस्तु को काफी हद तक बयाँ कर देता है। यह उन हथियारों की सार्थकता की पड़ताल तथा उनकी धार को मापने का उपक्रम है जिनकी मदद से कभी गाँधी ने विदेशी अत्याचार तथा गुलामी का प्रतिरोध किया था। यह निम्नवर्ग(सबाल्टर्न) तथा नगरों के बरक्स छोटी जगहों की स्थापना तथा उनके महत्त्व का प्रतिपादन भी है जिनकी आवाज़ इतिहास में 'नक्कारखाने में तूती' की आवाज की तरह दब जाती है या फिर दबा दी जाती है। यह निम्नवर्ग आज के अस्मितामूलक विमर्शों में मुखर अभिव्यक्ति पा रहे स्त्री और दलित हैं तथा वो छोटी सी जगह बलिया जनपद है।

अमरकांत का यह उपन्यास उनके समय और समाज को उसके अनेक रंगों में अभिव्यक्त करता है । उनका समय और समाज भी बहुआयामी है चूंकि जीवन का लंबा सफर अमरकांत ने तय किया है। अतः उनका भोगा हुआ यथार्थ भी उतना ही बहुकालिक और गहरा है। इस दृष्टि से अमरकांत द्वारा देखा गया अंग्रेजों की प्रत्यक्ष गुलामी का भारत आज मानसिक गुलामी और छद्म उपनिवेशवाद से ग्रस्त है। इसका प्रभाव अमरकांत की रचनात्मकता और संवेदना पर अवश्य पड़ा है । इसकी स्पष्ट छाप उनकी रचनाओं पर पड़ी है। इस उपन्यास के द्वारा अमरकांत ने आज के समय और समाज तथा स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले के समय और समाज के अंतर को पाटते हुए यह दिखाया है कि तब की समस्याएँ आज भी बदले हुए रूप में ज्यादा भयावह तौर पर हमारे सामने हैं।

सन् 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना के तौर पर दर्ज है। इस परिघटना का प्रभाव स्पष्ट रूप से और समाज पर भी पड़ा तथा इससे प्रभावित रचनाओं की अच्छी ख़ासी संख्या मौजूद है। परंतु इसमें अच्छे उपन्यासों की संख्या गिनी चुनी है जो तत्कालीन घटनाक्रमों का कलात्मक यथार्थवादी स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। ऐसे में आज़ादी के लगभग 60 सालों बाद अमरकांत का यह उपन्यास अपनी तमाम सीमाओं के बावजूद अपनी विशेषताओं में सबको पीछे छोड़ता प्रतीत होता है। इसका एक कारण उपन्यास विधा का निरंतर परिपक्व होते जाना है तो दूसरा समकालीन परिदृश्य में उसी यथार्थ की प्रासंगिकता का और गहरे तौर पर उभरना है।

विदित है कि यह उपन्यास बलिया को केंद्र में रखकर लिखा गया है। परंतु इसकी दृष्टि बलिया तक ही सीमित न होकर भारतवर्ष के उस किसी भी छोटे से स्थान से सम्बद्ध है जिसने

देश की आज़ादी के लिए संघर्ष में अपना योगदान दिया है। यह दिल्ली, चटगाँव, कलकत्ता, मद्रास जैसी बड़ी जगहों से आगे बढ़कर किसी भी छोटे जगह के महत्त्व और योगदान को स्थापित करने की दृष्टि है जिसे इतिहास में यथेष्ट स्थान नहीं दिया गया है। दूसरी तरफ यह तथाकथित संभ्रांत वर्ग के राष्ट्र निर्माण में योगदान से आगे बढ़कर उस वर्ग के योगदान की पड़ताल है जो हाशिये पर धकेल दिया गया है तथा अपने महत्त्वपूर्ण योगदान के बावजूद आज तक उपेक्षित है। प्रश्न यह उठता है कि अगर देश का इतिहास गांधी, नेहरू, सुभाष, तिलक इत्यादि को नायक के तौर पर याद रख सकता है तो 'चित्तू पांडे' केवल छोटे से जनपद में ही इतिहास बनकर क्यों रह गए? दयाशंकर, नम्रता, सदाशयव्रत, भगजोगिनी, रामचरन जैसे पात्र जिन गुमनाम नायकों के प्रतीक हैं, उन्हें अपने महत्त्वपूर्ण योगदान के बावजूद गुमनामी का शिकार क्यों होना पड़ा? उन नायकों का उल्लेख भी उसी गर्व से क्यों नहीं किया जा सकता जो स्त्री, दलित और मजदूर होने के अभिशाप के बावजूद अपने कार्यों के आधार पर नायक होने के हकदार हैं।

उपन्यास ऐसे ही प्रश्नों को अपने पीछे छोड़ते हुए अहिंसा और सत्याग्रह जैसे हथियारों की प्रासंगिकता को आज के संदर्भ में भी देखने की दृष्टि प्रदान करता है। उपन्यास में 'सबाल्टर्न' को दिया गया महत्त्व समाज में उनके प्रतिष्ठापूर्ण स्थान की वकालत करता है। अमरकांत आज के विमर्शों की चिंताओं तथा उसके समाधान के लिए इतिहास की यात्रा करते हैं। यह हाशिये के समाज द्वारा अपने इतिहास की मांग की पूर्ति की दिशा में उठाया गया एक सार्थक कदम प्रतीत होता है। यह उपन्यास जन-जन की शक्ति को पहचानने की नयी दृष्टि और इतिहास में निम्नवर्ग (सबाल्टर्न) के योगदान को रेखांकित करने के साथ ही उनके उत्थान के लिए भी एक नवीन दृष्टिकोण विकसित करने का आग्रह उत्पन्न करते हुए एक शोषणमुक्त समतापरक समाज की स्थापना पर भी बल देता है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ

1. अमरकांत इन्हीं हथियारों से, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2003

सहायक ग्रंथ

2. अमरकांत अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ(भाग-1), अमर कृतित्व प्रकाशन,इलाहाबाद, संस्करण-1998
3. अमरकांत अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ(भाग-2), अमर कृतित्व प्रकाशन,इलाहाबाद,प्रथम संस्करण 1998
4. अमरकांत कुछ यादें कुछ बातें, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2005
5. अमीन, शाहीद, निम्नवर्गीय प्रसंग(भाग-1), राजकमल प्रकाशन,
6. पांडे ,ज्ञानेन्द्र(सं) नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1995 दूसरी आवृत्ति-2010
7. अमीन, शाहिद, निम्नवर्गीय प्रसंग(भाग-2),राजकमल प्रकाशन,

   पांडे, ज्ञानेन्द्र(सं) नई दिल्ली, पहला संस्करण-2002

8. उपाध्याय, कृष्णदेव लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, संस्करण-2008

9. कुमार, अजय स्वतंत्रता आंदोलन पर आधारित उपन्यास, राष्ट्रभाषा संस्थान, केरल, प्रथम संस्करण-1999

10. चंद्र, विपिन आधुनिक भारत, एन सी ई आर टी , 1199

10.चतुर्वेदी, रामस्वरूप हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,संस्करण 2009

11.जैन, नेमिचन्द्र(सं.) मुक्तिबोध ग्रंथावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,द्वितीय परिवर्धित संस्करण-1986, पहली आवृत्ति-1998

12.द्विवेदी, हजारीप्रसाद हिंदी साहित्य:उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण- 1990

13.नंबूदिरीपाद, ई एम एस भारत का स्वाधीनता संग्राम, अनुवादक- आनंदस्वरूप वर्मा, ग्रंथ शिल्पी,नई दिल्ली, प्रथम हिंदी संस्करण-2004

14. भारद्वाज, हेतु संस्कृति और साहित्य, मंथन पब्लिकेशन, जयपुर, संस्करण-2004

15.मिश्र, रामदरश हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा परिवर्धित संस्करण-2001, दूसरी आवृत्ति-2008

16.मिश्र, सत्य प्रकाश(सं.) सृजन और परिवेश-2, इलाहाबाद संग्रहालय,इलाहाबाद प्रथम संस्करण-2005

17.मुक्तिबोध, गजानन माधव एक साहित्यिक की डायरी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, नौवां संस्करण- 2000

18. यादव, वीरेंद्र उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2009

19. राय, गोपाल हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला पाठ्य पुस्तक संस्करण-2005

20. राय, सत्या(सं.) भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली,तृतीय संस्करण-1990

21. वर्मा, धीरेन्द्र (सं.) हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल, वाराणसी, संस्करण-2000

22. शर्मा, राम स्वतंत्रता आंदोलन (1857-1947), नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2004

23.शर्मा, कृष्णदत्त,हरिमोहन(सं.) साहित्य और आधुनिक बोध, स्वराज प्रकाशन, संस्करण-2004

24.सिंह, अयोध्या भारत का मुक्तिसंग्राम, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण-2003

25.सिंह, गया मध्ययुगीन भक्ति साहित्य का लोकतात्विक आधार,रचना प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण-1984

26.सिंह, नामवर(सं.) आधुनिक हिंदी उपन्यास(भाग-2),राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2010

27. सिंह, प्रेम क्रांति का विचार और हिंदी उपन्यास, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, संस्करण-2000

28.सिंह, बच्चन आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संशोधित संस्करण-2007

29.सरकार, सुमित आधुनिक भारत, अनुवाद-सुशीला डोभाल, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,1992,नौंवी आवृत्ति-2007

30. हमज़ातोव, रसूल मेरा दागिस्तान, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2007

पत्र-पत्रिकाएँ

1.रवीन्द्र कालिया(सं.) नया ज्ञानोदय,मई 2010, नयी दिल्ली

2.रमण सिन्हा (सं.) शब्दयोग, मार्च 2007,नयी दिल्ली

3.प्रभाकर श्रोत्रिय(सं.) वागर्थ, जून 2004, कोलकाता

4.शैलेश मानस(सं.) कथाक्रम, जनवरी- मार्च- 2004,

5.स्वयं प्रकाश,राजेन्द्र शर्मा(सं) प्रगतिशील वसुधा 87,अक्तूबर-दिसंबर, 2010, भोपाल